doors and sit inside. I entirely endorse what *my* friend, the Minister, has said. I think this is the right policy to follow that all languages are available and all languages should be available. But, let us not become prisoners of the past in one sense that even if people talk of the moon, we shall talk in a language which does not spell that out. Let us try to build the language, languages cannot be built overnight. People take centuries and centuries particularly to make a language modern and particularly to make a method of communication of the modem urges of the humanity. I, therefore, feel and appeal, if I may, with your permission, Sir,—and I do so, if you kindly give me some credit for being in that age group, which is slightly senior to others— I urge this debate must end on one note. And that note is we are Indians first, we are Indians last. All languages are ours and all shall prosper.

THE VICE-CHAIRMAN (SYED SIBTEY RAZI): The matter ends here. We adjourn for lunch till 2.30 p.m.

The House then adjourned for lunch at thirty-three minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-three minutes past two of the clock, The Vice-Chairman (Mist Saroj Khaparde) in the Chair.

The payment of gratuity (Amendment) Bill, 1993.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Honourable Members before we take up Speciai Mentions, first we will take up the legislative businesg. Shri P. A. Sangma.

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF LABOUR (SHRI P. A. SANGMA): Madam Vice-Chairperson,I move;

"That the following amendments made by the Lok Sabha in the Pay*ment* of Gratunty (Amendment) Bill, 1994, be taken into consideration, namely:—

Enacting Formula

1. Page 1, line 1 — for 'Forty-fourth' substitute "Forty-fifth'

Clause-l

2. Page, 1, line *4.*- for '199'3' substitute '1994'

The question was put and the motion was adopted.

SHRI P. A. SANGMA; I move:

"That the amendments made by the Lok Sabha in the Bill be agreed to*

The question was put and the motion was adopted.

Formation of Committee for Centenary Celebration of Acharya Vinoba Bhave

SPECIAL MENTIONS

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : उप-सभाध्यक्ष जी, मैं इस विशेष उल्लेख के अन्तर्गत आज जिस बात की ओर सरकार और राष्ट्र का ध्यान दिलाना चाहता हूं, उसमें मैं समझता हू कि पूरा सदन मेरे साथ रहेगा । महोदया, आचार्य विनोबा भावे की शताब्दी आ रही है और इसलिये मैं चाहता हू कि सरकार इस बात पर गभीरता से सोचे कि आचार्य विनोबा भावे शताब्दी समारोह के लिये एक राष्ट्रीय समिति का गठन हो । राष्ट्रीय समिति का का ही गठन न हो बल्कि आचार्य विनोबा भावे ने जिन नैतिक मूल्यों, जिन कार्यों और जिन सर्वोदय सिद्धांतों के लिये कार्य किया है, उसके अनुसार सरकार प्रतिबद्ध रूप से कार्य करे । उपसभाध्यक्ष जी, राजनीति इस समय मूल्यहीन होती जा रही है । नैतिक मूल्यों का जिस तरह से ह्रास हो रहा है, ऐसे समय में आचार्य विनोबा भावे की शताब्दी अगर हम इन उद्देश्यों

को सामने रखकर करें जिससे गांधीवादी मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिये आचार्य विनोबा भावे ने जो कार्य किया राजनीति से अलग हटकर जो कार्य किया, उनका महत्व रहे, इसलिये मैं इन बातों को कह रहा हूं । आज हमारे देश एक संकट की स्थिति से गुजर रहा है । राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक इन चारों पहलुओं पर जब हम जाते हैं तो हम देखते हैं कि जैसे हमारे सामने एक बहुत बड़ा संकट है । आर्थिक संकट को मैं इतना बड़ा संकट नहीं मानता हूं, जितना बड़ा संकट नैतिक मूल्यों के ह्रास का संकट है । आचार्य विनोबा भावे जिस बात के प्रतीक थे, वह यह था कि राजनीति से अलग हटकर रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहते हुये गांधीवादी मूल्यों की रक्षा करते हुये किस तरह से देश में एक शुद्ध वातावरण तैयार किया जा सकता है । इस संबंध में बहुत विस्तार से कहने की जरूरत है भी और नहीं भी है, इसलिये कि आचार्या विनोबा भावे उन लोगों में से थे जिन्होंने अपने जीवन का संघर्ष निश्चित रूप से राजनैतिक तौर से किया लेकिन उनका व्यक्तित्व राजनैतिक कीचड़ से ऊपर कमल की तरह प्रतिभासित था । जहां एक ओर उन्होंने सर्वोदय सिद्धांतों का प्रचार किया, दूसरी ओर रचनात्मक कार्यक्रमों को उन्होंने विशेष महत्व दिया । गांधी जी की टोली में बहुत सारे लोग थे । नेहरू जी थे, राजेन्द्र बाबू थे, सरदार वल्लभभाई पटेल थे, मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे बहुत सारे लोग थे और दूसरी ओर रचनात्मक कार्य करने वाले लोग थे, जिनमें आचार्य विनोबा भावे सर्वोपरि थे । मैं यह चाहता हूं कि उनके प्रति राष्ट्र को कृतज्ञता ज्ञापित करने को अवसर मिला है तो राष्ट्र उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये अपने अन्दर एक चेतना जागृत करे, और यह चेतना राजनीति से अलग हो । आज हमारा जीवन राजनीतिमय हो गया है । जाति-पांति में, धर्म में, फिरकापरस्ती में, छोटी-छोटी बातों में हम संलग्न हैं । आज विनोबा भावे को याद करने की जरूरत है, और हम सोचें कि हमारी राष्ट्रीय अस्मिता क्या है । उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपका अधिक समय नहीं ले रहा हूं । घंटी बजाने का दूसरा मौका मैं नहीं दे रहा हूं । लेकिन यह अफसोस की बात है कि हमारे यहां चाहे भाषा की बात लें, लिपि की बात लें, एकता की बात लें और राष्ट्रीय अस्मिकता की बात लें तो इनका किस तरह से ह्रास हुआ है ? आज इसी सदन में एक विदेशी भाषा अंग्रेजी को लेकर जब तालियां बजी तो शर्म से हमारा सर झुक गया । . . (व्यवधान) ने लिखा है कि भारतीय संसद में . . (व्यवधान) आप समझिये भारत अंग्रेजों का गुलाम है ।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : अगर आप इस तरह से बोलेंगे तो मुझे नहीं लगता कि यह खत्म होगा । आप संक्षेप में अपनी बात कह दें ।

श्री शंकर दयाल सिंह : आचार्य विनोबा भावे की जन्म शताब्दी कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर बनें अकर जैसी गांधी जी की शताब्दी बनायी गयी थी, जैसे गांधी जी की 125वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रीय समिति प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में बनायी गयी उसी तरह से आचार्य विनोबा भावे की 100वीं जयन्ती पर राष्ट्रीय स्तर पर एक समिति प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में बने, यही मेरा आपसे निवेदन है ।

SHRIMATI JAYANTHI NATARA-JAN (Tamil Nadu): Madam, I have a point of order. *(Interruptions)* She is letting me raise it.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : विशेष उल्लेख में प्वाइंट आफ आर्डर नहीं उठाया जा सकता ।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : मैं उनको कहूंगी तो वे कह सकती हैं, आपको क्या तकलीफ है ।

SHRIMATI JAYANTHI NATARA-JAN: The Chair is letting roe to raise it. *(Interruptions)* Madam, my point of order is very simple. Acharya Vinoba Bhave is the property of the nation. All of us have the greatest respect for him. We were supporting what Mr. Shankar Dayal Singh said, whole heartedly. Bog

I would request you to expunge what he said about the *Videshi Bhasha,* After hearing what Mr. B. B. Dutta said ab out the North-East that English is the language of the North-East, to call it a *Videshi Bhasha* is not proper North-East is a part of India.

मैं हिन्दी में बोल सकती हूं . . (व्यवधान)

श्री शंकर दयाल सिंह : मैंने यहां पर आचार्य विनोबा भावे की बात कही है यह फिर दूसरी बातों को उठाने की कोशिश कर रहे हैं (व्यवधान) मैं भी उठाऊंगा । (व्यवधान) मैं जानता हूं यह बातें किस तरह से की जा रही हैं . . (व्यवधान) मैंने आचार्य विनोबा भावे जो देश की एकता के लिये बात कही, वह कही है (व्यवधान) आचार्य विनोबा भावे ने जो बात कही. . . (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): शंकर दयाल जी आप तो इतने सीनियर मेंबर हैं, उनको कहने दीजिये (व्यवधान)

श्री शंकर दयाल सिंह : यह दूसरी ओर ले जा रही हैं मेरी बात को ।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) दूसरी ओर नहीं ले जा रही हैं ।

श्री शंकर दयाल सिंह : आपने मुझे विशेष उल्लेख का मौका दिया । अगर इसमें उनका लाभ होगा तो वह भी कहेंगी इन बातों को । मैं यह चाहता हूं कि इसमें कोई बात ,मैं कहू तो अयन्ती जी उठ जायें । यह क्य कोई बिजली का करंट है, मैं इधर से स्विच दबाता हूं और वे खड़ी हो जाती हैं (व्यवधान)

For me, English is not an Indian language.

SHRIMATI JAYANTHI NATARA-JAN): English is not *Videshi.*

श्री शंकर दयाल सिंह : आपके लिये हो सकती है । मेरे लिये वह विदेशी भाषा है ।

For me, English is not an Indian language. *{Interruptions).*

श्रीमती जयन्ती नटराजन : क्या आप लोग तमिल में बोल सकते हैं ? (व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY *(*Tamil Nadu): You are also speaking in *Videsh! Bhasha* now.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: That is another thing. *{Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): *Videshi Bhasna* is not an unparliamentary word. Let it be there on record. *{Interruptions)*

श्री रजनी रंजन साहू (बिहार) : मैं भी एसोसिएट करता हूं ।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : सारा हाउस उनके विचारों के साथ आप को पसन्द करता है ।

श्री संघ प्रिय गौतम : अंग्रेजी गरीबों की भाषा नहीं है । अंग्रेजी शोषितों दलितों, पीड़ितों की भाषा नहीं है । (व्यवधान) अंग्रेजी पिछड़े लोगों की भाषा नहीं है, अंग्रेजी बेरोजगारों की भाषा नहीं है । अंग्रेजी इस देश के लोगों की भाषा नहीं है । अंग्रेजी इस देश की प्राचीन भाषा नहीं है । (व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, they are tring to divide the rountry in the name of language. *{Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (Kumari SAROJ KHAPERDE): If all of you speak together, I won't be able to hear what ou say. *{Interruptions)*

SHRI JAGESH DESAI (Mataarastra): Madam, Mahatma Gandhi regarded Vinoba Bhvve as the first *Satyagrahi* when he launched the first *Satyagraha mo*vement. We should mot forget [do not know whether you would like to

celebrate his birth that thing, centenary Or not, but what the had preached, how he had acted. the time has come when toe people of this country should know for what values Vinoba Ji had stood. As such, it is necessary that seminars should be organised in the country so mat people may know the views and works of Vinoba Ji. He was just like a saint. We have visited Paunar Ashram. Vou are from that area, Madam. What sort of feeling we have whan we go there. I think the Government must have some Committee to see that the people or our country are made aware of Vinoba is views and his works. As such, I request the Government to take note of what I said.

Release of 80 Patented Microbes in Japan

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI (Uttar Pradesh): Madam Vice-chairman, I want to bring to the notice of the-Government and this House a matte- which is of great import particularlv for the scientfic development in firs country. It has been reported that at 'east 80 different patented microbe?, which were meant or which were geneti-cally engineered for nitrogen fixing and for purifying the sewage, were legally imported into India and they have been distributed under the pretext that they would increase the crop production in the fields in New Delhi, Pondicherry. Uttar Pradesh and Punjab. Madam Vice-Chairman, the Department of Biotechnology has a responsibility to see and ensure that Indian are not treated like guinea-pigs. A Japanese firm, namely the International Nature Farming Research Centre. has admitted that a large number of bottles of micro-orgtn-isms have been sent to India, have been smuggled into India, and that against all rules they have been utilised. The *mala fide* intention of this foreign Company is obvious from the fact that the Indian sci-entists were not agreeable or they felt that the claims that they made were not justified; that is why it is unfortunate to see that they resorted to some kind of a pretext. I hope that the facts are not correct. I may be proved wrong on this score, but, at least, it has been reported in a national weekly that our Minister of Agriculure as well as the Minister of Environment had earlier visited the firm's headquarters and they, probably, unwillingly or unconsciously became a tool for sending this kind of material for use m our crops. But this is an extremely dangerous proposition because of a lalgd number of scientific implications which I would have liked to mention but for want of time-I would not mention, except saying that the Department of Biotechnology has been completely ignored in this regard, and secondly, among the possible dangers involved is the transformation of the microbes into a pest, the transfer of new genetically engineered genes to hitherto unknown species of the mutations thereof. This is a grave danger to the scientific world and, particularly, harmful to the agricultural community of our country

The Department of Biotechnology issues the guidelines but unfortunate!y, the difficulty is that those guidelines get ignored for the simple reason that when the patented things are brought into India, it is not known as to what the other elements are, because they will claim that these are patents and nothing will be disclosed: that is why this kind of a situation arises. I hope that there will be a full complete clarification in regard to hte entire situation that has arisen.

THE VICE-CHAIRMAN (MISS SAROJ KHAPARDE): Shri Sanjay Dalmia — not here.

Theft in a Tenrole of Lord Shiva in Thane

*श्री सतीश प्रधान (महाराष्ट्र) :

उपसभाध्यक्ष महोदया आपने मझे बोलने का मौका दिया है, इसके लिये मैं आप का शुक्रगुजार हूं। मैं सदन का ध्यान